आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषि अभिनन्दन ग्रन्थ(फोल्डर नं. ०१२०१३)

मुख्य टाईटल
प्रकाशकीय --३
सम्पादकीय -- ५
शुभ कामनाएं एवम सन्देश
मेरे गुरुदेव -- ३७
विषयानुक्रम -- ४४
प्रथम-खण्ड - आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषिजी व्यक्तित्व
एक ईन्द्रधनुषी व्यक्तित्व-- ४
अपनी नजर में -- ७
जीवन दर्शन --१३
विविध विशेषताओं के संगम-- ३९
आगमों में आचार्य का स्वरुप और आचार्य श्री आनन्द ऋषि ------------------------------४४
शिक्षा- प्रसारक श्री आनन्दाचार्य-- ५१
प्राकृतभाषा एवं श्रमण संस्कृति के प्रवकता---५६
आचार्य़ श्री एक जीवन दर्शन-- ६३
महर्षि आनन्द और उनका तत्वचिन्तन-- ६६
कर्तव्यनिष्ठ सेवा की साकारमूर्ति--७९
आचार्य प्रवर श्री आनन्दऋषिजी का --८४
अन्तरंग चित्र, शब्द पटल पर आगमों आदर्श में आचार्य श्री का व्यकितत्व बिम्ब------------- ९२
वाक् संयमी किन्तु कर्मयोगी--९५
आचार्य श्री का अनुपम जीवन --११०
धर्म के प्रचार-प्रसार में आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी का योगदान ------------------------------११२
श्रमण समघ के स्वर्ण कंकण की एक दीप्तिमान मणि--१२१
जीवन-स्पर्शी प्रवक्रता आचार्य देव --१२४
श्री आनन्द ऋषि का प्रवचन-विश्लेषण -- १२८
श्रद्धार्चन
कोटि-कोटि अभिनंदन --३
धर्म और संस्कृति के सजग प्रहरी--६
ज्योतिर्मय जीवन--१२
तुम सलामत रहो हजार वर्ष -- ३६
श्री आनन्द अभिनंदन --३७
श्रद्धार्चन आचार्य़ देव के प्रति--५०
श्रमणसंघ की वरिष्ठ विभूति--५३

अभिनन्दन बेला आई---५५
आनन्दमूर्ति आचार्य श्री आनन्द ऋषि ---------------------------------५८
आनन्ददाता आनन्दऋषि जी---६१
अभिनन्दना -- ६९
अभिनन्दन एक जागरुक चेतना का--------------------------------७३
महाराष्ट्र का कोहेनूर---७५
आनन्द पंचक अभिनन्दन -- ८२
अभिनन्दन शत-शत वार --८७
श्रद्धा के दो फूल--- ८८
तुम महान हो -- १९
वंदना---९१
आणंद पंचयथुई -- ९४
आनन्द ऋषि भजामि--- ९७
श्रद्धासुमन-- ९८
आचार्य प्रवर का अभिनन्दन------------------------------------- १००
भावाज्जलि---१०१
सुमनाज्जलि -- १०२
शत-शत वंदन--- १०२
आपांणां आचार्य़ श्री--- १०३
उदारता की मंजुल मूर्ति--- १०४
मेरे प्रणाम हैं---१०५
आनन्द के चरणों में -- १०६
श्रद्धा के सुमन---१०७
आचार्यनन्द पज्चक -- १०८
उनको वन्दना हमारी है--- १०९
श्रद्धा सुमन--१११
आचार्या-अर्चना ---११६
महाराष्ट के मान-गौरव--- ११७
आनन्द के मान-सरोवर---११८
चम-चम चमके है --११९
अनन्त-अनन्त श्रद्धा के अमर केन्द्र ------------------------------ १२३
हार्दिक श्रद्धार्चन --- १२३
श्रद्धा के सुमन---१२७
श्रद्धार्चन-- १३९
तुभ्यंनम --- १४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीय खण्ड - प्रवचन पंखुडियाँ

उपदेश श्रवण का पात्र -- १४३

जीवन विकास का सोपान-अनुशासन -- १४८

आचार परमो धर्म -- १५४

मानव जीवन का सदुपयोग --- १५८

जीवन महल की नींव विचार -- १६२

मीठी बानी बोलिए--- १६५

सहयोग सर्वत्र आवश्यक --- १६६

प्रीत की रीत क्या है --- १७४

सुख की खोज--- १७७

जाकी रही भावना जैसी-- १८१

संगत कीजे साधु की --- १८६

कम खाए, सुख पाए-- १९०

भावना भावनाशिनी-- १९४

कषायमुक्ति किलमुक्तिरेव -- १९९

मन की महिमा --- २०४

सुख का साधन-धर्म -- २१०

ऊंधै मत बटोही -- २१६

गुण पूजा करिए-- २२३

तृतिय-खण्ड - धर्म और दर्शन

भारतीय दर्शन के सामान्य सिद्धान्त – श्री विजय मुनि शास्त्री-------------------------------- २२९

जैनदर्शन में अजीव तत्व – श्री पुष्करमुनिजी--- २३९

निश्चय और व्यवहार किसका आश्रयलें – डॉ. सागरमल जैन---------------------------------- २४८

शून्यवाद और स्यादवाद – प्रो. दलसुख मालवणीया-- २६५

नयवाद सिद्धान्त और व्यवहार की तुला पर – डॉ. कृपाशंकर व्यास-------------------------- २७०

ज्ञानवाद एक परिशीलन – श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री-- २७७

स्यावाद सिद्धान्त एक अनुशीलन – श्री देवकुमार जैन-- ३०६

जैन रहस्यवाद बनाम अध्यात्मवाद – श्रीमती पुष्पलता जैन ---------------------------------- ३३०

जैन- दर्शन का कबीर-साहित्य पर प्रभाव – विद्यावती जैन ----------------------------------- ३४२

धर्म का सार्वभौम रुप – प्रवर्तक श्री विनयमुनिजी --- ३५४

पंचास्तिकाय में पुदगल – डॉ. हुकमचन्द पार्श्वनाथ संगवे---------------------------------------

धर्म का वैज्ञानिक विवेचन – डॉ. वीरेन्द्रसिंह--- ३६८

कर्म-सिद्धान्त भाग्य-निर्माण की कला – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा-------------------------------- ३७८

नयवाद सिद्धान्त और व्यवहार की तुला पर – श्री श्रीचन्द चोरड़िया --------------------------- ३९२

अपरिग्रह और समाजवाद एक तुलना – श्री सौभाग्यमल जैन---------------------------------- ४००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आचार संहिता – मुनि श्री सौभाग्यमलजी--४०४
जैन साहित्य में क्षेत्र-गणित – डॉ. मुकुटबिहारीलाल अग्रवाल ---------------------------------४२२
चतुर्थ-खण्ड - प्राकृत भाषा और साहित्य
प्राकृतभाषा उदगम विकास और भेद- प्रभेद – मुनि श्री नगराजजी ------------------------------ १
पाईए- भासा – श्री चन्दनमुनि--- ३२
प्राकृ तथा अर्धमागधी में – प्रो. एस. एस. फिसके --- ४२
अन्तर और ऐक्य प्राकृक भाषा का व्याकरण परिवार – महासती श्री धर्मशीलाश्रीजी ----------- ४६
प्राकृत-वाड्-मय में शब्दालंकार – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी ---५५
प्राकृत साहित्य की विविधता और विशालता – श्री अगरचन्द नाहटा-------------------------- ६३
अक्षरविज्ञान एक अनुशीलन – मुनि श्री मोहनलालजी--- ६९
अपभ्रंश में वाक्य-संरचना के सांचे – डॉ. के. के. शर्मा ---७८
राजस्थानी-भाषा में प्राकृत-अपभ्रंश के प्रयोग – डॉ. प्रेमसुमन जैन----------------------------८५
विक्रमोर्वशीय नाटक के चतुर्थ अंक के प्राकृत अपभ्रंश पधों का मूल्यांकन – डॉ. राजाराम जैन -- ९३
प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार में आचार्य श्री का योगदान – श्री बदरीनारायण शुक्ल ------------१०१
पंचम-खण्ड - ईतिहास और संस्कृति
जैन घर्म का सांस्कृतिक मूल्यांकन – डॉ. नरेन्द्र भानावत------------------------------------१०५
जैन श्रमणसंघ समीक्षात्मक परिशीलन – डॉ. छगनलाल शास्त्री------------------------------ ११५
क्या जैन सम्प्रदायों का एकीकरण संभव है – श्री जवाहरलाल मुणोत------------------------ १५१
श्री कृष्ण का वासुदेवत्व जैनद्रष्टि – श्री महावीर कोटिया-------------------------------------१५५
पुरतत्व-मीमांसा – श्री जिनविजय मुनि --१५८
जैन संस्कृति में संगीत का स्थान – श्रीमती निरुपमादेवी खंडेलवाल ---------------------------१८१
ग्रन्थो की सुरक्षा में राजस्थान के जैनों का योगदान – डॉ. कस्तुरचन्द कासलीवाल ---------- १८७
मथुरा का प्राचीन जैन-शिल्प – श्री गणेशप्रसाद जैन --- १९४
जैन साहित्यांतील काही प्रमुख आचार्य व त्यांचे प्रमुख ग्रन्थ – प्रो. ए. एस. मोरे ------------२०७
ऋषि संप्रदाय वे पांच सौ वर्ष – श्री कुन्दन ऋषि --- २१८
षष्ठ-खण्ड – अंग्रेजी
Acharya Anand Rishijee- A Redeemer Of The Moderm Wasteland – Satishkumar Jain --1
Realigious Awakening – Dr. A. N. Upadhye --6
The Vedic Gayatri Mantra& Its Metemorphosis In The Jainism – Dr. N. M. Kansara --8
The Jaina Idea Of Universe – Prof. M. S. Ranadive--- 17
Human Nature and Destiny in Jainism – Dr. Bashishtha Narain Tripathi-------------------- 23
A Reflction On the Life of Tirthankara Mahavira – Dr. J. C. Sikdar---------------------------- 37
Varahamihira and Bhadrabahu – Dr. Ajay Mitra Shastri------------------------------------- 52

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org